8

आदमी जिसने बांटा

(2 राजाओं 4:38-44)

एलिय्याह के स्वर्ग में उठा लिए जाने के बाद एलीशा की सेवकाई यरीहो में जल शुद्ध करने के बहुत ही ''सहायक'' आश्चर्यकर्म के साथ आरम्भ हुई। उसके बाद और आश्चर्यजनक घटनाएं जैसे सेनाओं को बचाना और मुर्दा लड़के को जिलाना, हुईं। इस पाठ में हम उन सहायक आश्चर्यकर्मों में जाएंगे, जो एलीशा की सेवकाई का भाग थे। हम दो आश्चर्यकर्मों के संक्षिप्त वृत्तांतों का अध्ययन करेंगे, दोनों का सम्बन्ध खाने से है। मैं उन्हें *बांटने* के आश्चर्यकर्म मानता हूं।

एलीशा ने बांटा

एलीशा ने अपना खाना बांटा (4:38-41)

कहानी आरम्भ होती है, ''तब एलीशा गिलगाल को लौट गया'' (आयत 38क)। गिलगाल यरदन घाटी में था, जो यरीहो से अधिक दूर नहीं था। (''एलीशा के समय में इस्राएल, यहूदा और आस-पास के देश'' मानचित्र देखें।) नबियों की एक पाठशाला गिलगाल में थी। इस पाठशाला में नबी लगातार आता रहता होगा। हमारी कहानी के समय में ''देश में अकाल था'' (आयत 38ख)। सम्भवतया यह 8:1 वाला अकाल ही है। जो यहोवा की ओर से इस्राएलियों की मूर्तिपूजा को दण्डित करने और उन्हें मन फिराव में घुटनों पर लाने के लिए था।

एलीशा ने अकाल के दौरान शूनेमिन स्त्री को दूर भेज दिया था (8:1, 2), परन्तु वह और नबियों के चेले देश में ही रहे थे। मुझे एक पिता का स्मरण आता है जो खतरे के समय में, अपने परिवार को खतरे से निकलने के लिए भेज देता है, जबकि स्वयं वह उस खतरे का सामना करने के लिए रुक जाता है। नबी की जीवन शैली को अपनाने वालों के लिए जीवन कभी आसान नहीं होता था (देखें 4:1); अकाल के दौरान तो यह और भी कठिन हो जाता होगा। एफ़. डब्ल्यू. क्रमचर ने शब्दों की एक तस्वीर बनाई है कि किस प्रकार गिलगाल का इलाका प्रभावित हुआ होगा और किस प्रकार नबियों के चेलों को खाना मिलता होगा।

> सुन्दर देश को पहचानना कठिन हो सकता है, जो अब इतना वीरान हो चुका है। किसी समय, जहां तक नज़र जा सकती है, अनाज के लहलहाते सुनहरी खेतों के अलावा और कुछ नहीं होता था; हर तरफ हमें भारी गाड़ियां, फसल के भरपूर खजानों के नीचे हर ओर कराहती मिलतीं, जबकि दाख और अनार अपने उपजाऊ भोज के भार तले झुके होते।
>
> परन्तु अब, कितना बड़ा बदलाव आ गया है! खेतों में सूखा पसर गया है; चरागाहें सूख गई हैं; हंसिए को खुटिया की दीवार पर जंग लग गया है और जनसंख्या का अधिकतर भाग अकाल की पीड़ाओं को सह रहा है। यहां तक कि नबियों के पुत्र भी,

जिनके पास एलीशा जाता था, निराशा में हैं।

एलीशा के गिलगाल में पहुंचने पर, उस छोटे झुंड के ऊपर थोड़ी चमक आई। उनका अपर्याप्त भण्डार लगभग खत्म ही हो गया था, उनके बाग सूख गए थे, उनके बटुए खाली हो गए थे।[1]

कोई संदेह नहीं कि गिलगाल के छात्र एलीशा की राह देखते होंगे। इस बार उसके आने के बाद उनके उसके सामने बैठने में देर नहीं लगी (आयत 38ग) कि उससे बुद्धि की बातें सुनें। उन्हें अपना पेट भरने के लिए भोजन चाहिए होगा, पर एलीशा ने उनकी आत्माओं को खिलाना था। परमेश्वर के वचन पर सामान्य शिक्षा के अलावा एलीशा ने उन्हें प्रभु के वफ़ादार रहने के लिए प्रोत्साहित किया होगा, चाहे जीवन कितना भी कठिन क्यों न हो जाए। शायद उसने उनके इस सवाल पर भी बात की हो कि अपने जीवन यहोवा को समर्पित करने के बावजूद वे दुख क्यों भोग रहे हैं।

उसी समय एलीशा ने निर्णय लिया कि खाना खाया जाए। हो सकता है कि उसने सैकड़ों पेटों की गड़गड़ाहट सुनी हो (देखें आयत 43)। (भूखे पेट वालों को सिखाना कठिन है।) शायद खाने का समय था। एलीशा ने ''अपने सेवक से कहा, हण्डा चढ़ाकर भविष्यवक्ताओं के चेलों के लिए कुछ पका'' (आयत 38घ)। ''अपने सेवक'' उस छात्र को कहा गया होगा जिसे नबी के गिलगाल में आने पर उसकी आवश्यकताओं का ध्यान रखने का काम सौंपा गया होगा, पर यह शब्द सम्भवतया गेहाजी के हो सकते हैं (आयत 12)। ''हण्डा'' एक बड़ा, सामुदायिक, बहुउद्देशीय बर्तन होता था। जब मैं लड़का था तो हमारे पड़ोस में लगभग हर घर में एक बड़ा, धातु का देगचा होता था। इस देगचे को खाना बनाने, बर्तन धोने, और नहाने, गर्म करने के, भण्डार रखने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। पाठशाला का ''हण्डा'' ऐसा ही बर्तन होगा।

एलीशा जब पाठशाला में अतिथि था, आमतौर पर छात्र ही उसके लिए खाना उपलब्ध कराते होंगे। यह तथ्य कि एलीशा ने खाने की तैयारी का आरम्भ करवाया, सुझाव देता है कि उसने मुख्य सामग्री उपलब्ध करवाई। वह एक प्रसिद्ध व्यक्ति था इसलिए लोग उसके पास समय-समय पर सामान लाते होंगे (देखें आयत 42)। उसके पास अधिक नहीं होगा पर जो भी था, वह उसे बांटने को तैयार था।

खाना बनाने वाले लोग आम तौर पर स्वाद बढ़ाने के लिए मीट और मसाले को थोड़ा ब्राउन करके आरम्भ करते हैं और फिर उसमें सब्जियां डालते हैं। परन्तु यदि मीट न हो तो सब्जी स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक हो सकती है। एलीशा के सेवक द्वारा खाना बनाते समय हर एक चेले के पास जो कुछ होगा, हण्डे में डाला गया होगा (देखें आयत 39)। मैं रात को बाहर रहा हूं, जहां शाम के खाने की मुख्य डिश को ''होबोस्टयू'' कहा जाता था। हर व्यक्ति को भोजन का एक टुकड़ा लाना होता था और सभी डिब्बों में से चीज़ें निकालकर एक बड़े देगचे में डालकर उन्हें चूल्हे पर गर्म किया जाता था। हमें बहुत भूख लगी होती तो उससे निकलने वाला मिश्रण आम तौर पर खाने के योग्य होता था।

स्पष्टतया खाने में योगदान देने के लिए गिलगाल में एक छात्र के पास कुछ नहीं था। सो वह ''मैदान में साग तोड़ने गया'' (आयत 39क)। कई जंगली पौधे खाने योग्य होते हैं। मेरे पिता कई

बार मुझे अपने रात के खाने में ''हरे पत्ते'' डालने के लिए पास के खेत में भेज देते थे। इस्राएल में अकाल पड़ा हुआ था (आयत 38), इसलिए सब्जियां तो होंगी ही नहीं। मैं कल्पना करता हूं कि उस आदमी को जब लगा कि खाने में उसके सामान को शामिल कर लिया जाएगा तो उसे बड़ी खुशी हुई: ''जंगली लता'' जो ''इन्द्रायण'' से ढकी हुई थी (आयत 39ख, ग)। वचन कहता है कि वह ''जंगली लता पाकर अपनी अंकवार भर इन्द्रायण तोड़ ले आया'' (आयत 39ग)। मेरी दादी मुर्गियों के कमरे में से अण्डे इकट्ठे करते हुए अपनी चुनरी का इस्तेमाल करती थी। इसी प्रकार से इस आदमी ने अपने वस्त्र के अद्र भाग का इस्तेमाल किया और उसे इन्द्रायणों से भर लिया।

इस बात पर काफ़ी अनुमान लगाया गया है कि ये ''इन्द्रायण'' क्या थे, पर हम सचमुच में इतना जानते हैं कि वह जहरीले थे (आयत 40)। संसार भर में हानि रहित लगने वाली सब्जी के पौधे मिल जाते हैं पर होते वे ज़हरीले हैं। मेरे दिमाग में मशरूम (कुकुरमुता) का उदाहरण आता है। मुझे मशरूम पसन्द हैं पर उनकी कई किस्में ऐसी हैं यदि उसे खा लें तो आप मर सकते हैं। कहानी वाले आदमी की तरह मुझे नहीं मालूम कि घातक मशरूम में से कौन सी खाने योग्य होती हैं। सो मुझे अपने भोजन के लिए मशरूम तोड़कर लाने के बजाय लकड़ियां इकट्ठी करने की सलाह बेहतर होगी।

इस बात के लिए धन्यवाद करते हुए कि वह भोजन में योगदान दे सकता है, उस आदमी ने इन्द्रायण लाए और ''फांक-फांक करके पकने के लिए हण्डे में डाल दिया'' (आयत 39ग)। यहां यह आयत कहती है कि ''वे [छात्र] उस [इन्द्रायण] को न पहचानते थे'' (आयत 39घ)। यदि किसी छात्र को स्थानीय वनस्पति का ज्ञान होता तो वे फांके बनाने और कडशी मारने में भाग न लेते।

जब इस मिश्रण में से बुलबुले निकलने लगे तो गंध आस-पास के इलाके में फैल गई होगी। लोगों के मुंह में पानी आने लगा होगा। कइयों के लिए कई दिनों या हफ़्तों के बाद पहली बार अच्छा खाना हो सकता था। अन्त में खाना तैयार हो गया। परमेश्वर का उसकी आशिषों के लिए धन्यवाद करने के बाद,[2] ''उन्होंने उन मनुष्यों के खाने के लिए हण्डे में से [खाना] परोसा'' (आयत 40क)। खाने वाले कई लोग थे इसलिए उन्होंने खाना एक-दूसरे के साथ बांटने के लिए बड़े-बड़े कई प्यालों में डाल दिया होगा। मैं लोगों के उत्सुकता से उस मिश्रण में रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े डुबोते और उन टुकड़ों को अपने मुंह में डालने की कल्पना कर सकता हूं (आयत 40ख)।

शांत माहौल एक दम से बिगड़ गया। आदमी एलीशा के पास चिल्लाने लगे, ''हे परमेश्वर के भक्त हण्डे में माहुर है'' (आयत 40ग)! उन्हें कैसे पता चला कि ''हण्डे में मौत'' है? हो सकता है कि उस मिश्रण की कोई विशेष गंध या कड़वा स्वाद था। हो सकता है कि छात्रों में से किसी एक ने जो स्थानीय पौधों का जानकार था, उस मिश्रण में किसी ज़हरीली सब्जी पर ध्यान दिया। शायद वे मना करने लगे। शायद उनके पेट की हैंठन बढ़ गई और वे उल्टियां करने लगे। वचन हमें केवल यही बताता है कि ''वे उस में से खा न सके'' (आयत 40घ)। भोज विनाश में बदल गया था!

खाने की कमी के कारण वे इस खाने को फैंकने से कतरा रहे होंगे पर और कर भी क्या

सकते थे। एलीशा ने बताया, ''अच्छा, कुछ मैदा ले आओ'' (आयत 41क)। फिर नबी ने दूसरों की समस्या का समाधान करने के लिए साथ लिया। जब खाना एलीशा के पास लाया गया, ''तब उस ने उसे हण्डे में डाल'' दिया (आयत 41ख)। उस खाने में डाले जाने वाले खाने के ज़हर को खत्म करने से क्या सम्बन्ध है। वही जो बुरे जल में नमक डालकर उसे शुद्ध करने में था (2 राजाओं 2:19-22)। यानी प्रभु की ओर से होने के अलावा और कुछ नहीं। एक बार फिर सामर्थ इस ढंग में नहीं, बल्कि परमेश्वर के साथ एलीशा के सम्बन्ध में थी।

तब नबी ने कहा, ''उन लोगों को खाने के लिए परोस दे'' (आयत 41ग)। मैं कुछ छात्रों को कटोरे की ओर संदेह से देखने की कल्पना कर सकता हूं। फिर मैं एक बहादुर को उस मिश्रण में रोटी का टुकड़ा डालते, सावधानी से उसे मुंह में रखते देखता हूं। उसके माथे पर त्यूरी है, धीरे-धीरे वह उसको चबाता और फिर गले में रखता और निगल जाता है। उसने मुस्कुराते हुए घोषणा की, ''स्वादिष्ट!'' ''फिर हण्डे में कुछ हानि की वस्तु न रही'' (आयत 41घ)। जल्द ही सब लोग रोटी के टुकड़ों को खाने के कटोरों में डुबो रहे थे और वातावरण में खुशी भर गई थी क्योंकि एलीशा अपना भोजन उनके साथ बांटने को तैयार था।

एलीशा ने अपनी रोटी बांटी (4:42-44)

अगली कहानी सम्भवतया एलीशा के गिलगाल में रहते समय घटी। ''और कोई मनुष्य बाल-शालीशा से'' आया (आयत 42क)। बाल-शलीशा ''शलीशा देश में एक जगह [देखें 1 शमूएल 9:4] गिलगाल के [उत्तर] पश्चिम में एक देश।''[3] (''एलीशा के समय में इस्राएल यहूदा और आस-पास के देश'' मानचित्र देखें।) वह मनुष्य ''पहिले उपजे हुए जव की बीस रोटियां, और अपनी बोरी में हरी बालें परमेश्वर के भक्त के पास ले आया'' (2 राजाओं 4:42ख)। ''पहले उपजे'' फसल की पहली उपज थी, जो प्रभु के लिए समर्पित थी। आम तौर पर पहला फल याजकों के पास ले जाया जाता था (देखें लैव्यव्यवस्था 23:10), परन्तु इस्राएल में कोई विश्वासयोग्य याजक नहीं रहा था। जो लोग परमेश्वर को समर्पित थे स्पष्टतया वे ''एलीशा की ओर ... वाचा के अपने प्रभु के वास्तविक प्रतिनिधि के रूप में देखते थे।''[4] इस प्रकार वह आदमी नबी के पास पहले फल लेकर आया।

वह आदमी ''जव की बीस रोटियां, और अपनी बोरी में हरी बालें'' (2 राजाओं 4:42ख)। ''बोरी'' शब्द पढ़कर एक बड़ा सा कपड़े का थैला मत सोचें (जैसे 50 किलो की खाद की बोरी)। अनुवादित शब्द ''बोरी'' थैली (परस जैसी) होगी जिसे अपना निजी समान रखने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। फिर, ''रोटियां'' पढ़कर यह न सोचें कि ''रोटियां'' पक्की हुई रोटी का बड़ा सा डिब्बा होगा। छोटी-छोटी रोटियां समझें। यह भी ध्यान दिया जा सकता है कि जो को राओ के लिए प्राथमिकता दिया जाने वाला अनाज नहीं, बल्कि घटिया अनाज था। पर यह न भूलें कि देश अकाल से श्रापित था। ''जव की बीस रोटियां और अपनी बोरी में भरी बालें'' देने वाले की ओर से एक बड़ा बलिदान होगा। वे प्रभु के लिए उस आदमी के समर्पण और एलीशा के लिए उसके सम्मान का प्रमाण थी।

एक छोटे लड़के के दोपहर के खाने के लिए जो की पांच रोटियां काफ़ी होंगी (देखें यूहन्ना 6:9)। बीस रोटियां और अनाज की कुछ बालों से एलीशा और उसके सेवक के लिए दो दिन

का खाने का समान हो जाता। यदि वह इस उपहार को अपने लिए रख लेता तो किसी ने नबी पर दोष न लगाना था पर वह वह आदमी था, जो बांटने में विश्वास रखता था। उसने किसी भी चीज़ को जो उसके पास थी, अपना नहीं माना (देखें प्रेरितों 4:32) बल्कि यह तो प्रभु की थी (भजन संहिता 24:1; देखें यूहन्ना 3:27; 1 कुरिन्थियों 4:7), और उसे ज़रूरतमंद लोगों के बीच में बांटा जाना चाहिए। इस प्रकार उसने अपने सेवक से कहा, ''उन लोगों को खाने के लिए [रोटियां और बालें] दे'' (2 राजाओं 4:42घ)। ''लोगों'' सम्भवतया नबियों के चेले ही होंगे, जिन्हें एलीशा ने पिछली कहानी में खिलाया था।

सेवक संदेहवादी था। आयत 43 कहती है, ''उसके टहलुए ने कहा, क्या मैं सौ मनुष्यों के सामने इतना ही रख दूं?'' (आयत 43क)। ''टहलुआ'' सम्भवतया गेहजी ही था और यह शब्द उस आदमी के सांसारिक दृष्टिकोण से मेल खाते हैं (देखें 5:20-27)। उसकी प्रतिक्रिया से हमें यीशु द्वारा थोड़े से खाने से हज़ारों लोगों को खिलाने से पूर्व उसके चेलों की प्रक्रिया का स्मरण आता है (देखें मत्ती 14:17; मरकुस 6:37; यूहन्ना 6:8, 9)।

गेहजी के दृष्टिकोण को समझना आसान है। एक सौ भूखे आदमियों के सामने बीस छोटी छोटी रोटियां रखने का अर्थ उनका पेट भरने के बजाय उन्हें और परेशान करना होता; क्योंकि एक के हाथ एक गराही ही लगती। हर आदमी के एक ही गराही लेने से खाना खत्म हो जाता। सेवक के मन में एक और विचार आया हो सकता है: ''यदि खाना खत्म हो गया, तो *हम* क्या खाएंगे?'' तौभी गेहजी का काम सवाल करना नहीं, बल्कि आज्ञा मानना था। क्या वह यह भूल गया कि वह उस आदमी की सेवा कर रहा है जिसे परमेश्वर ने एक सेना के लिए जल देने (2 राजाओं 3:9-20) और एक विधवा के लिए तेल बढ़ाने (4:1-7) के लिए इस्तेमाल किया?

गेहजी ने तर्क दिया हो सकता है, *मैं* बीस छोटी छोटी रोटियों से सौ लोगों को नहीं खिला सकता, तो यह नहीं हो सकता! ऐसा तर्क देना आम बात है, पर यह एक कमज़ोरी है। कल्पना करें कि कोई मुझे एक दिन में कुछ मील सफर करने के लिए कहता है। मैं सिर हिलाते हुए कहता हूं, ''यदि मैं पूरा दिन भी भाग सकूं, तो मैं रात तक इतना नहीं चल सकता!'' मुझे निर्देश देने वाला उत्तर देता है, ''पर तुझे अपनी शक्ति से नहीं चलना है! मैं तुझे गाड़ी दूंगा!'' यह सच है कि मैं एक दिन में केवल एक सीमा तक ही चल सकता हूं पर यदि मुझे घोड़ा या गाड़ी या बाइक दी जाए तो स्थिति नाटकीय रूप से बदल जाती है। गेहाजी की तरह ही कई लोग केवल इस पर विचार करते हैं कि *वे* क्या कर सकते हैं न कि इस पर कि *परमेश्वर की सहायता से* वे क्या कर सकते हैं।

मुझे लगता है कि अपने सेवक को आज्ञा दोहराने के समय एलीशा थोड़ा भड़का होगा: ''लोगों को दे कि खाएं'' (आयत 43ख)। नबी ने आगे कहा, ''क्योंकि यहोवा यों कहता है, उनके खाने के बाद कुछ बच भी जाएगा'' (आयत 43ग)। ''यहोवा यूं कहता है'' हमें बताता है कि इसमें परमेश्वर का हस्तक्षेप था और ''परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है'' (मत्ती 19:26)। ''कुछ बच'' जाने का अर्थ यह होना था कि न केवल हर कोई खाएगा बल्कि हर कोई पेट भर खा सकता है।

मैं इस बात पर भी चकित होता हूं कि क्या ''उस ने उनके [सौ लोगों के] आगे धर दिया [रोटियां और बालें]'' (आयत 44क)। और मन ही मन बुड़बुड़ाया, ''फुसफुसाना, फुसफुसाना

... इसका कोई मतलब नहीं है! ... फुसफुसाना, फुसफुसाना, फुसफुसाना ... अब तक का मेरा सबसे मूढ़ काम ... फुसफुसाना, फुसफुसाना और फुसफुसाना।'' सेवक के विश्वास की कमी के बाद, भीड़ के सब लोगों ने पेट भर खाया और उसमें से भी यहोवा की भविष्यवाणी के अनुसार खाना बच गया (आयत 44ख)। फिर हमें वह समय याद आता है जब यीशु ने कुछ रोटियों और मछलियों के साथ भीड़ को खिलाया था (मत्ती 14:20; 15:37)।

यह वचन हमें यह नहीं बताता कि आश्चर्यकर्म कैसे हुआ। हो सकता है कि हाण्डी के बजाय (2 राजाओं 4:1-6) गेहाजी बोरी में से खाना निकालता रहा हो। परन्तु यह हुआ, आपको पता नहीं कि वह (और एक सौ खाना खाने वाले) यह देखकर चकित हो रहे होंगे कि खाना खत्म ही नहीं हो रहा था?

इस प्रकार परमेश्वर ने उन लोगों के लिए जो उसमें भरोसा रखते हैं अपनी देखभाल और रक्षा की बात दिखाई (देखें मत्ती 6:33)। इस अवसर पर उसने यह एलीशा की उदारता के द्वारा किया जो ऐसा आदमी था कि चाहे थोड़ा या कम पर उसे बांटने से नहीं हिचकिचाता था।

हमें बांटना चाहिए

वचन पाठ पर विचार करते हुए कई प्रासंगिकताएं ध्यान में आती हैं। उदाहरण के लिए हम अपने लोगों के लिए परमेश्वर के अनुग्रहकारी उपाय पर ध्यान कर सकते हैं। नबियों के चेले खाना खा लेने के बाद हैरान हुए होंगे कि और खाना कहां से आ रहा था। फिर दरवाज़े पर दस्तक हुई और एक आदमी जौं की रोटियां और बालों वाली बोरी लेकर खड़ा था! सदियों से बहुत से मसीही लोग हैरान होते रहे हैं कि वे इस या उस संकट से कैसे निकल आए जबकि सहायता एक अप्रत्याशी स्रोत से हुई। ''जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?'' (रोमियों 8:32)।

इसके अलावा हम अपने आस-पास के गुप्त खतरों पर बात करने के लिए ''हण्डी में मौत'' वाक्यांश से लेने की इच्छा कर सकते हैं। कइयों को ''भोली'' लगने वाली चीज़ें खतरनाक हो सकती हैं:

- कई फिल्में और टीवी के कार्यक्रम, पुस्तकें और संगीत।
- तम्बाकू और शराब और अवैध नशों का इस्तेमाल।
- भौतिकवाद और सांसारिक जीवन शैली।
- धार्मिक अज्ञानता और गलती।

इन आयतों से जिनका हमने अध्ययन किया है कई प्रासंगिकताएं बनाई जा सकती हैं, पर मैं एलीशा के उदार स्वभाव पर ज़ोर देना चाहता हूं, जो हमें भी अपनाने की आवश्यकता है।

बांटने का महत्व

बांटना सीखना आसान सबक नहीं है। जब मेरी सबसे बड़ी बेटी सिंडी तीन साल की थी, तो उसकी बाइबल क्लास टीचर ने बांटने पर एक सबक सिखाया। उस सबक को व्यवहार में लाने के लिए क्लास के बच्चों को एक-दूसरे के साथ अपने खिलौने बांटने का अवसर दिया गया

था। सिंडी चलकर दूसरी छोटी लड़की के पास गई, उस लड़की के हाथ से खिलौना छीना, अपने नन्हे पांव पटके और कहने लगी, ''मेरे साथ शेयर करो!''

बांटना या शेयर करना हमेशा हमारा पसन्दीदा अभ्यास नहीं होता, प्रभु हमें आज्ञा से या उदाहरण से ऐसा करने को कहता है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपने चेलों से कहा, ''जिस के पास दो कुरते हों, वह उसके साथ जिस के पास नहीं है बांट दे और जिस के पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही करे'' (लूका 3:11)। यरूशलेम के मसीही लोग ''अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेचकर, जैसी आवश्यकता होती थी, बांट दिया करते थे'' (प्रेरितों 2:45)। पौलुस ने कहा कि भोजन को परमेश्वर ने इसलिए बनाया ताकि ''विश्वासी, और सत्य के पहिचानने वाले उन्हें धन्यवाद के साथ खाएं'' (1 तीमुथियुस 4:3)। तीमुथियुस को अपने सुनने वालों को सिखाना था कि ''उदार और सहायता देने में तत्पर हों'' (1 तीमुथियुस 6:18)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा, ''पर भलाई करना, और उदारता न भूलो'' (इब्रानियों 13:16क)।

दूसरों के साथ बांटने से जुड़े और कई हवाले हैं:

> इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ (गलातियों 6:10)।
>
> चोरी करने वाला फिर चोरी न करे; बरन भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे; इसलिए कि जिसे प्रयोजन हो, उसे देने को उसके पास कुछ हो (इफिसियों 4:28)।
>
> यदि कोई भाई या बहिन नंगे उघाड़े हों, और उन्हें प्रति दिन भोजन की घटी हो। और तुममें से कोई उन से कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो; पर जो वस्तुएं देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें न दे, तो क्या लाभ? (याकूब 2:15, 16)।

बांटने से कई अवसर मिलते हैं:

- यह मानने का अवसर कि हर चीज़ परमेश्वर की है और हम केवल उसके भण्डारी हैं जो हमारे पास है।
- और परमेश्वर के जैसे बनने का अवसर, जिसमें ''अपनी सबसे कीमती चीज़'' यानी अपने पुत्र यीशु मसीह सहित हमारे साथ हर चीज़ बांटी है।
- व्यावहारिक रूप में दूसरों के लिए अपने प्रेम को व्यक्त करने का अवसर।
- दूसरों को प्रसन्न करने का अवसर।
- स्वार्थ के साथ जीवन भर चलने वाली लड़ाई में तरक्की करने का अवसर। हम में से अधिकतर लोगों के लिए बांटना कठिन होने का कारण यह है कि हम स्वार्थी हैं। हम तर्क देते हैं, ''जो कुछ हमारे पास है वह हमने कठिन परिश्रम से पाया है। यह हमारा है। हम इसे ऐसे ही क्यों दे दें?'' परमेश्वर हमें यह समझने में सहायता करे कि हम आशीषित हुए हैं और बदले में हम भी दूसरों को आशीष दे सकते हैं।

एक आपत्ति उठ सकती है: ''पर कुछ लोग जीविका कमाने का प्रयास तक नहीं करते। वे दूसरों के टुकड़ों पर पलकर संतुष्ट रहते हैं। बेशक, हमें ऐसे लोगों के साथ बांटने की आवश्यकता

नहीं है!'' नहीं, उनके साथ भी। पौलुस ने कहा कि ''यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए'' (2 थिस्सलुनीकियों 3:10ख)। परन्तु आमतौर पर हमें पता नहीं होता है कि दूसरे के हालात कैसे हैं। जहां तक हमें मालूम है, वह अपनी पूरी कोशिश कर रहा हो सकता है। ध्यान रखें कि हम दूसरों को दोषी ठहराने वाले दूसरों का न्याय करने के दोषी न बन जाएं। यदि गलती करनी ही है तो दान देने की गलती करें।

बांटने की आशिषें

इस पर विचार करें: क्या एलीशा को कष्ट इसलिए हुआ क्योंकि उसने बांटा था? क्या उसे खाना नहीं मिला था? क्या वह भूखा रहा था? नहीं, परमेश्वर ने नबी को जिसकी आवश्यकता थी उससे आशीषित किया, इसके अलावा उसे यह जानने की संतुष्टि थी कि उसने दूसरों की सहायता की है।

उदारता से बांटने वालों ने एक अद्‌भुत सच्चाई को पाया है कि बांटने से कम नहीं होता। कुछ बातों के लिए जिन्हें हम बांटते हैं, यह बिल्कुल स्पष्ट है। यदि हम अपनी प्रसन्नता को बांटते हैं तो यह बढ़ती ही है, कम नहीं होती। यदि हम दूसरों के साथ विचार को बांटते हैं, तो हमारे विचार और बढ़ते हैं, कम नहीं होते। मेरा एक मित्र बताता है कि यह नियम गुलाब पर भी लागू होता है। वह साल के पहले गुलाब दूसरों के साथ बांटने के लिए उन्हें काट देता है। वह कहता है कि गुलाब का पौधा इस प्रकार से पूरा मौसम नये गुलाब लगते रहने के लिए पक्का हो जाता है।

यह नियम हो सकता है कि और बातों में जिन्हें हम बांटते हैं स्पष्ट न हो, जैसे धन और सम्पत्ति के विषय में। तौभी प्रभु हमें आश्वस्त करता है कि यह सही है। यीशु ने कहा, ''दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: ... क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा'' (लूका 6:38)। फिर उसने कहा, ''लेने से देना धन्य है'' (प्रेरितों 20:35)। पौलुस ने लिखा:

> परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा। ... और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर, समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ हो (2 कुरिन्थियों 9:6-8)।

सारांश

मेरी प्रार्थना है कि हम सब जो कुछ हमारे पास है, उसे बांटने के लिए एलीशा के उदाहरण से प्रेरणा लें, कि हम बांटने को अपनी आदत बना लें। किसी ने कहा है, ''बहुत बांटने का तरीका यह है कि रोज़-रोज़ थोड़ा-थोड़ा बांटा जाए।''[5]

बेशक सबसे महत्वपूर्ण चीज़ जो हमें बांटनी है, वह सुसामचार अर्थात यीशु मसीह की खुशखबरी है। ज़हरीले खाने की कहानी और पाप से हमारे उद्धार के बीच कुछ समानताएं हैं।

- जब पाप हमारे जीवनों में आता है, तो यह आत्मिक मृत्यु को लाता है-वैसे ही जैसे इन्द्रयाण से हण्डी में मृत्यु आई।

- अपने आप में हम नबियों के पुत्रों की तरह जो अपनी निराशा में चिल्लाने के अलावा कुछ नहीं कर सकते थे, हम परिस्थिति के हल के लिए असहाय हैं। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यीशु का लहू उनके पापों के दोष को जो उसके पास लौट आते हैं, वैसे ही मिटा देता है जैसे भूमि से लिए गए भोजन में ज़हर को खत्म कर दिया।
- परमेश्वर हमें अपने उद्धार में भागीदार वैसे ही बनाता है, जैसे उसमें छात्रों को खाना लाने के लिए एलीशा ने शामिल किया। प्रभु हमें उसकी मृत्यु और उसके जी उठने के विश्वास (भरोसा) करने (यूहन्ना 3:16), अपने पापों से मन फिराने (लूका 13:3), अपने विश्वास का अंगीकार करने (मत्ती 10:32), बपतिस्मा लेने (मरकुस 16:16), और ''अन्त तक विश्वास योग्य रहने'' (मत्ती 10:22) कहता है।

दूसरों के साथ बांटने पर उन्हें आनन्दित देखकर एलीशा मुस्कुराया होगा। इसी प्रकार, यह जानने से बढ़कर हमारे लिए कोई आनन्द की बात नहीं होगी कि आपके साथ मेरे सुसमाचार बांटने से आपके जीवन को आशीष मिली है।

टिप्पणियां

[1]एफ़. डब्ल्यू. क्रमचर, *एलिशा ए प्रोफेट फ़ॉर अवर टाइम्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1993), 71. [2]इसका उल्लेख नहीं है, पर उस समाज में ऐसी प्रार्थना आम होती होगी। [3]सी. एफ़. केल एंड एफ़ डेलिश, ''1 एंड 2 किंग्स,'' *कमैंट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट,* अंक 3, *1 एंड 2 किंग्स, 1 एंड 2 क्रोनिकल्स, एज्रा, नहेमायाह, एस्थर* (पीबॉडी, मैसाचुएटस: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1989), 315. [4]रॉबर्ट वेनॉय, नोट्स ऑन 2 किंग्स, *दि NIV स्टडी बाइबल,* संपा. केन्नथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 531. [5]एलेनर डोआंट, संक., *स्पीकर सोर्सबुक* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: मिनिस्टरी रिसोर्स लाइब्रेरी, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 224.